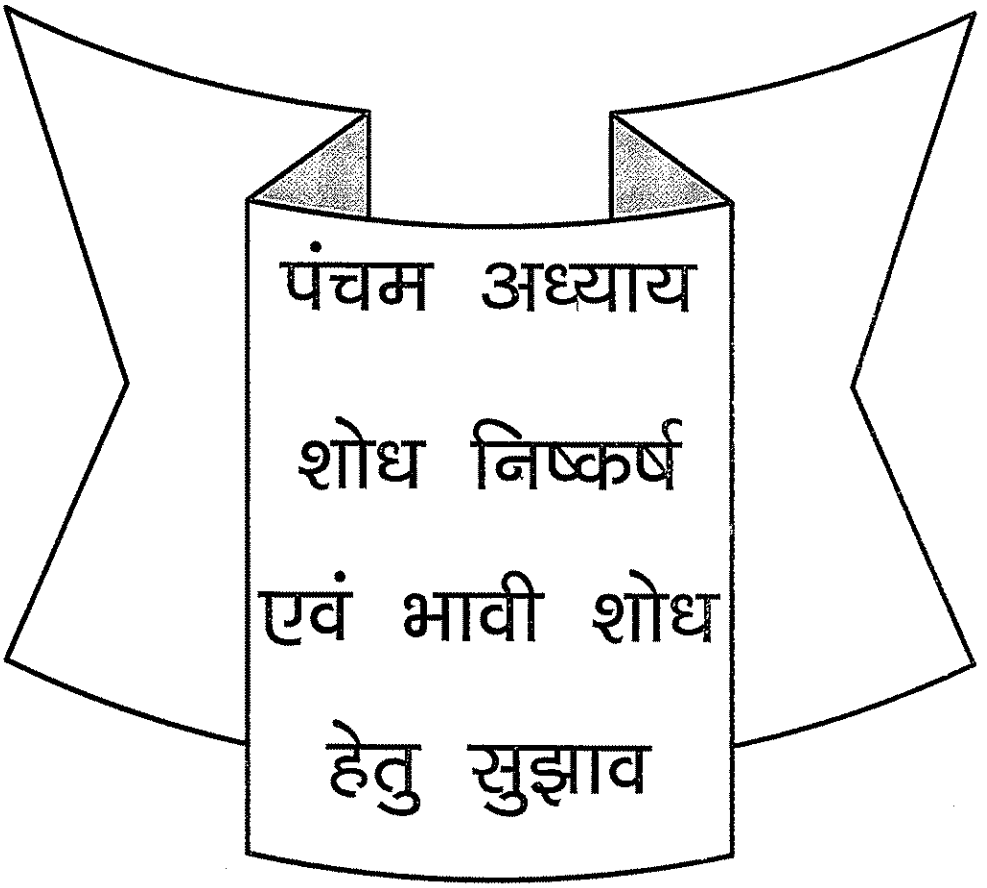
पंचम अध्याय
शोध निष्कर्ष
एवं भावी शोध
हेतु सुझाव

अध्याय–5

शोध निष्कर्ष एवं भावी शोध हेतु सुझाव

5.1 भूमिकाः–

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा तथा स्वास्थ्य की समुचित व्यवस्था पर निर्भर करती है। चाहे वह कोइ भी राष्ट्र हो शिक्षा को उद्देश्य एवं मूल्य परक और उपयोगी बनाने के लिए उसमें समया अनुसार परिवर्तन करना आवश्यक होता है। ज्ञानार्जन में मूल्यों एवं प्रार्थना का महत्व सर्वोपरि है। वह अपने आप में अध्ययन का स्वतंत्र विषय तो है ही समस्त ज्ञान का वहन करने वाली ज्ञान गंगा भी है। प्राथमिक स्तर पर बालक के लिए प्रार्थना ज्ञानार्जन में सहायता प्रदान करती है। उसमें आध्यात्मिक, सांस्कृतिक विद्यालयीन मूल्यों एवं राष्ट्रीय मूल्य और अखिल भारतीय की संपदा सम्मिलित है।

स्वतंत्रता के बाद से आज तक शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए शासन के लोकव्यापीकरण के लिए कई प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाये है और लोकव्यापीकरण का लक्ष्य पूर्ण करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान के तहत कार्य प्रणाली को बागडोर ऊँचे कदम पर बढ़ती जा रही है। शिक्षा एवं मूल्य परिवर्तन का सर्वोतम साधन प्रार्थना सभा है प्रार्थना सभा के बिना हम विभिन्न कौशल एवं मूल्यों की कल्पनाभी नहीं कर सकते है। यह केवल विद्यालयीन ही नहीं विश्वविद्यालयीन स्थान पर भी अपना कार्य कर सकती है।

प्रशिक्षणार्थी अपने विचारों को बडे ही प्रभाव पूर्ण ढंग से बोलकर व्यक्त कर सकता है। वहीं दूसरी ओर ऐसे भी लोग है जो बहुत सारी सूचनाओं के होते हुए भी प्रार्थना सभा के अभाव के कारण वह अपने कौशल एवं मूल्यों को दूसरो तक पहुँचा सकते नहीं है इसी बात को ध्यान में रखकर इस समस्या का चुनाव किया है।

5.2 शोध कार्य का शैक्षिक महत्वः–

इस अध्ययन से कौशल विकास एवं मूल्य अध्ययन क्षेत्र में सहायता मिल सकती है जिसके माध्यम से विद्यालयीन एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों में परिवर्तन लाया जा सकता है। और इनसे व्यवसायिक दक्षता से परिचित कराया जा सकता है। अध्ययन के निम्नलिखित महत्व देखने को मिलते है।

- ❖ प्रार्थना सभा के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों मे विभिन्न कौशल्य एवं मूल्य में परिवर्तन लाया जा सकता है।
- ❖ प्रार्थना सभा के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को एक अच्छे वक्ता बना सकते है।
- ❖ प्रार्थना सभा के जरीये प्रशिक्षणार्थियों में विभिन्न मूल्यों का विकास किया जा सकता है।
- ❖ प्रशिक्षणार्थियों की पुस्तकालय के प्रति भी अधिकतर रूचि प्रार्थना सभाके माध्यम से कर सकते है।
- ❖ अध्यापक द्वारा प्रार्थना सभा के प्रति रूचि एवं कौशल वर्धन ज्ञान के क्षेत्रों को अलग–अलग प्रार्थना गाकर विकसित किया जाना चाहिए।

❖ इस अध्ययन का एक महत्व यह भी है कि प्रशिक्षणार्थी प्रार्थना सभा मे रूचि उत्पन्न करें ताकि वह अपनी तरक्की कर सके।

5.3 समस्या कथनः–

बी.एड. कॉलेज में होनेवाली प्रार्थना सभा से प्रशिक्षणार्थीयों में विकसित होनेवाले कौशलों एवं मूल्य परिर्वतन का अध्ययन

5.4 शोध में प्रयुक्त चरः–

कौशल, प्रशिक्षणार्थी एवं मूल्य

5.5 अध्ययन के उद्देश्यः–

किसी भी शोध कार्य करने के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य जरूर होते है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों का समावेश किया गया है।

- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा का विश्लेषण करना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा की गतिविधियों का अध्ययन करना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा के प्रति महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रिया को जानना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिता में अंतर पायाजाता है।

- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा से महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में विकसित होने वाले अभिव्यक्ति कौशल का अध्ययन करना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा से महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में परिवर्तित होने वाले मूल्यो का अध्ययन करना।

5.6 शोध प्रश्नः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये निम्नलिखित शोध प्रश्नो को लिया गया है।

- क्या बी.एड. कॉलेज के महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की प्रार्थना सभा में होनेवाली प्रतिक्रिया में अन्तर है?
- क्या प्रार्थना सभा में होने वाली गतिविधियों से महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में अभिव्यक्ति कौशल की वृद्धि में अंतर होता है?
- क्या प्रार्थना सभा से महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के मूल्य परिवर्तन में अंतर होता है?

5.7 शोध निष्कर्षः–

- प्रशिक्षणार्थियों को प्रार्थना करने से लाभ होता है।
- प्रशिक्षणार्थियों को प्रार्थना सभा में सहभागी होने से विभिन्न कौशलो जैसे श्रवण कौशल, गान कौशल, लैखन कौशल, वांचन कौशल एवं मेंखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है।

- प्रशिक्षणार्थियों को प्रार्थना सभा में सहभागी होने से विभिन्न मूल्यों जैसे सामाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, एकता का मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य एवं राष्ट्रीय मूल्य का विकास होता है।

5.8 प्रतिदर्श चयनः-

शोध कार्य मे शोध प्रश्नो को तार्किक आधार प्रदान करने के लिए प्रतिदर्श के रूप में 100 प्रशिक्षणार्थी लिये गये जिस में 23 प्रशिक्षणार्थी एवं 77 प्रशिक्षणानीयाँ को लिया गया है। जिसका विवरण मैने आग `के रेखाचित्रों में किया है, प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चर निम्नलिखित है

चरः-कौशल, प्रशिक्षणार्थी एवं मूल्य

5.9शोध अध्ययन का सीमांकनः-

किसी भी कार्य के लिए उस कार्य के आधार पर उनकी सीमाएँ निश्चित करना आवश्यक होता है। जिनसे कार्य वैधिय एवं विश्वसनीय बन सके। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भी सीमाओं का निर्माण किया गया है। जो निम्नस्य हैः

- **भेंगोलिक दृष्टि सेः-**

भेंगोलिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत गुजरात राज्य के आणंद जिले की एक बी.एड् प्रशिक्षण संस्थातक सीमीत है।

- **वैयक्तिक दृष्टि से:-**

  वैयक्तिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत बी.एड् प्रशिक्षणार्थी एवं प्रशिक्षणार्थिनीयाँ तक सीमित है।

- **शैक्षणिक दृष्टि से:-**

  शैक्षणिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन बी.एड् कक्षा तक सीमित है।

- **विषयगत दृष्टि से:-**

  विषयगत दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रार्थना सभा तक सीमित है।

  प्रस्तुत शोध अध्ययन में एक प्रशिक्षण बी.एड् कॉलेज के 100 प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित है।

5.10 सुझाव

1. प्रशिक्षणार्थियों के लिए सुझाव

- कॉलेज में होनेवाली प्रार्थना सभा में नियमित रूप से आना चाहिए ताकि कौशल्य में वृद्धि हो और मूल्यों में परिवर्तन हो सके।
- प्रार्थना सभा मे नियमित प्रार्थनागीत गाना चाहिए ताकि गान कौशल का विकास हो सके।
- प्रार्थना सभा में गाये जानेवाले विभिन्न राष्ट्रगीत एवं प्रतिज्ञा बोलना चाहिए ताकि मूल्यों में परिवर्तन हो सके।

- प्रार्थना सभा में प्रवचन नियमित रूप से बोलना चाहिए ताकि अभिव्यक्ति कौशल का विकास हो सके।

2. **अध्यापको के लिए सुझाव**

- प्रशिक्षणार्थीयों को नियमित प्रर्थना करने का आग्रह रखना चाहिए ताकि प्रर्थना में रूचि ले सके।
- प्रार्थना सभा में गीत स्पर्धा का आयोजन करना चाहिए ताकि प्रशिक्षणार्थी में गान कौशल का विकास हो सके।
- प्रार्थना सभा में विभिन्न प्रकार के प्रवचन देने चाहिए ताकि प्रशिक्षणार्थी में मेंखिक अभिव्यक्ति का विकास हो।
- अध्ययन अध्यापन कार्य शुरू करने से पूर्व प्रार्थना सभा को पूर्ण करना चाहिए।
- प्राथमिक स्तर पर बालकों को प्रार्थनासभा पर ध्यान देना चाहिए।
- प्रार्थना सभा में विभिन्न धर्म की प्रार्थना करनी चाहिए ता कि मूल्यो में परिवर्तन हो सके।

3. पालकों के लिए सुझाव

- धर में सुबह शाम प्रार्थना करनी चाहिए।
- बुर्जुगों द्वारा प्रार्थना का महत्व समझाना चाहिए।
- माता–पिता द्वारा नियमित रूप से प्रार्थना एवं मूल्यो को ग्रहण करने का आग्रह करना चाहिए।
- धर में विभिन्न धार्मिक पत्रिकाए मंगवानी चाहिए।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

- माता–पिता के द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों तथा व्यक्तिगत मूल्यों के बारे में जानकारी देनी चाहिए।

5.11 भावी शोध हेतु सुझावः–

भविष्य में निम्न विष्यवस्तु से संबंधित विषयो पर महत्वपूर्ण अध्ययन किये जा सकते है।

- ग्रामीण एवं शहरि प्रशिक्षणार्थियो की प्रार्थना सभा से प्राप्त कौशल एवं मूल्य परिवर्तन का अध्ययन किया जा सकता है।
- सभी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियो में पाये जाने वाले मूल्यो एवं कौशल्यो का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रारंभिक स्तर पर शहरी शिक्षको व शिक्षिकाओं में शायेल प्रार्थना सभा की अभिवृति का अध्ययन किया जा सकता है।
- बी.एड़ कार्यक्रम के अंन्तरगत प्रशिक्षणार्थियों में विकषित होनेवाले कौशल का अध्ययन किया जा सकता है।
- प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण(PTC) तथा बी.एड़ के प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- शालाओं में कार्यरत शिक्षको तथा शिक्षिकाओं के मूल्यों तथा कौशल का अध्ययन किया जा सकता है।

D – 411